प्रो० सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम, समाजशास्त्र विभाग
ग्रामीण समाजशास्त्र, पत्र सं०- VI, बी० ए० (ऑनर्स) खण्ड- II

समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र (Scope) —

(1) ग्रामीण ढांचा (Rural Structure) - जब मनुष्य घुमन्तू जीवन व्यतीत करता था तो सामाजिक जीवन भी संगठित और व्यवस्थित नहीं था। गाँवों में जातीय आधार पर मोहल्ले पाये जाते हैं तथा अछूत जातियाँ ग्राम से दूर निवास बनाकर रहती हैं। ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण बसावट, उनके प्रकार तथा उनका सामाजिक जीवन पर प्रभाव आदि का अध्ययन करता है।

(2) ग्रामीण सामाजिक संगठन (Rural Social organisation) - ग्रामीण सामाजिक संगठन के विभिन्न तत्वों, प्रकारों एवं कार्यों का अध्ययन ग्रामीण समाजशास्त्र का ही क्षेत्र है। ग्रामों में पाये जाते वाले विभिन्न संगठनों परिवार एवं विवाह, जाति व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था, प्रशासन व्यवस्था, स्वास्थ्य, धर्म आदि की संरचना एवं प्रकार्यों का अध्ययन किया जाता है।

(3) ग्रामीण सामाजिक समूह (Rural Social Groups) - मनुष्य में समूह में रहने की आदत होती है जिसके कारण वह गाँव बनाकर रहने लगा। मनुष्य ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए

अनेक प्रकार के समूहों जैसे परिवार, सांस्कृतिक समूह, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक के रूप में देखे जा सकते हैं।

(4) ग्रामीण सामाजिक संस्थाएं (Rural Social Institution) — सामाजिक संस्थाएं सामूहिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की समान द्वारा स्वीकृत विधियाँ हैं। इसके अंतर्गत ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण रीति-रिवाजों, जनरीतियों, रूढ़ियों, प्रथाओं, नियमों एवं कानूनों आदि के स्वरूप, प्रकार एवं प्रकार्यों का अध्ययन करता है।

(5) ग्रामीण सामाजिक प्रक्रियाएं (Rural Social Processes) — ग्रामीण पर्यावरण में पाये जानेवाली विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं जैसे सहयोग, व्यवस्थापन, एकीकरण, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, सामाजीकरण आदि का अध्ययन भी ग्रामीण समाजशास्त्र के अंतर्गत आता है।

(6) ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन (Rural Social Change) — आज औद्योगीकरण, नगरीकरण, संचार एवं यातायात के विकसित साधनों, बढ़ती हुई शिक्षा आदि ने ग्रामीणों को गतिशील और परिवर्तनशील बना दिया है। ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण समाज में घटित होने वाले परिवर्तनों, उनके कारणों दिशा, गति, प्रकृति, स्वरूप परिणाम आदि का अध्ययन भी करता है।

Page N. 03

(7) ग्रामीण सामाजिक समस्याएं (Rural Social Problems) —
सिम्स के अनुसार "गांवों में रहने से उत्पन्न समस्या अथवा अनेक समस्याओं को ही सामान्यतः ग्रामीण समाजशास्त्र की विषय-वस्तु माना जाता है" प्रमुख ग्रामीण समस्याएं इस प्रकार से हैं - गरीबी, ऋणग्रस्तता, बीमारी, मनोरंजन की समस्या, अशिक्षा, निम्न जीवन स्तर, मकानों की समस्या, कृषि की समस्या तथा पशुओं की गिरी हुई दशा आदि जिनका ग्रामीण समाजशास्त्री ही अध्ययन करते हैं।

(8) ग्रामीण नगरीय संबंध (Rural Urban Relationships) —
ग्रामीण एवं नगरीय जीवन एकदम एक-दूसरे से पृथक नहीं बल्कि उनमें अंशों का ही अंतर है। ग्रामीण सामाजिक जीवन ~~नगरी~~ नगरीय जीवन से प्रभावित होता है और उसे प्रभावित भी करता है। ग्रामीण एवं नगरीय जीवन का तुलनात्मक अध्ययन भी

ग्रामीण समाजशास्त्र करता है। सिम्सन कहता है कि "ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण तथा नगरीय संस्कृति के बीच अन्तः क्रियाओं की ~~उपेक्षा~~ उपेक्षा नहीं कर सकता।"

(9) ग्रामीण जनता (Rural Population) – ग्रामीण समाजशास्त्र ग्रामीण पर्यावरण में निवास करनेवाली जनसंख्या का भी अध्ययन करता है जिसके अंतर्गत ग्रामीण जनसंख्या की रचना, प्रकृति, वितरण, उत्पत्ति, घनत्त्व, जन्म एवं मृत्यु दर, लोगों का रहन सहन, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, आयु, जाति, धर्म आदि के आधार पर बनावट आदि का विवेचन किया जाता है।

(10) ग्रामीण पुनर्निर्माण (Rural Reconstruction) – ग्रामीण समाजशास्त्र के अंतर्गत अब तक जिन विषयों को ~~सम~~ सम्मिलित किया गया है वे सभी सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करने वाले हैं। ग्रामीण समाजशास्त्र का व्यावहारिक पक्ष भी है। सिद्धांतों द्वारा प्राप्त ज्ञान को जब तक व्यवहार में प्रयोग नहीं

किया जाता तब तक उनकी उपयोगिता सामान्य जन के लिए संदिग्ध रहती है। ग्रामीण सामाजिक समस्याओं एवं सामाजिक जीवन के वैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर उनका समाधान सम्भव है। प्रो० ए०आर० देसाई का कहना है कि " ग्रामीण समाजशास्त्र कार्यकर्ताओं को ग्रामीण समस्याओं के सही विश्लेषण में सहायता देगा और आगे समस्याओं को समाप्त करने हेतु सही उपचार करने अथवा कार्यक्रम बनाने के योग्य बनेगा।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण समाजशास्त्र का क्षेत्र विस्तृत और व्यापक है जिसमें ग्रामीण जीवन के ~~सभी~~ सभी पहलू आ जाते हैं।

———x———